**TOI PAGE 2** 

The documentary gamered over

tion department, Prof Mu-

kul Srivastava, in a span of

prepared by Prof Srivasta-

va. Besides highest views,

various social media plat-

students but also the resi-

parts of the country who

know how prestigious this

100-year-old university is."

LU vice-chancellor Prof

18,000 views within 48 hours

LU documentary

gets 18,000 hits on

YouTube channel

# छात्रावास के संबंध खून के रिश्तों से भी गहरे...

**HINDUSTAN PAGE 4** 



हरदोई से 12वीं करके इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए लखनऊ आया। पिताजी ने 10 हजार रुपये का लोन लिया था। एक साल तैयारी की। चयन नहीं हुआ। तो 1994 में लखनऊ विश्वविद्यालय में बीए में दाखिला लिया। समाजशास्त्र, इतिहास और टूरिज्म मैनेजमेंट पढ़ते थे। सुभाष छात्रावास में रहते थे। यहां की दुनिया ही अलग थी। रिश्ते खून से भी ज्यादा गहरे थे। उस समय छात्रावास में रहने वाले कई साथी इस समय आईएएस, पीसीएस हैं। कई जज हैं। पर आज भी वह सब परिवार का हिस्सा बने हुए हैं।

बात वर्ष 2000 की है। उस समय छात्रनेता रवि सिंह और हम साथ में रहते थे। कमरा नम्बर सात था हमारा। अचानक रात में रवि सिंह के घर से फोन आया कि घर आ जाइए। वह बिजनौर के रहने वाले थे। हम लोग खाना खाकर कार से निकले। आगे मैं बैठा था और वह गाड़ी चला रहे थे।सिधौली में ट्रक ने कार में टक्कर मार दी। उनके सिर में चोट आई। उस समय छात्रावास में फोन लग चुके थे। मैंने



राजपाल कश्यप

जैसे तैसे छात्रावास में सूचना दी। जब तक उन्हें लेकर केजीएमयू पहुंचे तब तक सभी छात्र, यहां तक कि कुलपित भी अस्पताल पहुंच चुके थे। खून देने वालों की लाइन लगी थी। अस्पताल प्रशासन भी देखकर हैरान था। रवि की चोटें काफी गंभीर थीं। लिहाजा डॉक्टर उन्हें बचा नहीं सके और सुबह उनकी मौत हो गई। उनका अन्तिम संस्कार भी हम लोगों ने किया। मुझे याद है कि छात्र राजनीति में आने के लिए भी रवि ने ही प्रेरित किया था।

इसी साथ का नतीजा है कि जूनियर लाइब्रेरियन से शुरू करके छात्रसंघ का अध्यक्ष बनने तक का गौरव मिला। 2004-05 के दीक्षांत में विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित चक्रवर्ती मेडल से भी नवाजे गये। यह विश्वविद्यालय की ही देन है कि एक साधारण परिवार से आने वाले राजपाल को जनता का प्रतिनिधित्व करने लायक बना दिया। (*राजपाल* कश्यप विधान परिषद सदस्य हैं। )

# ऑड-इवेन

हजार से अधिक अभ्यर्थियों के लिविवि के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य

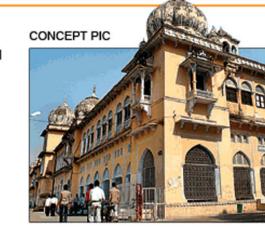
नवंबर रात बारह बजे तक समाप्त कार्यशाला का आयोजन किया गया।

आवंटन २९ नवंबर को किया जाएगा। एसोसिएशन द्वारा 'भारत में नृतन

डा. अमिता बाजपेयी ने बताया कि मध्यस्थता न्यायाधिकरण का उद्धवः

अभ्यर्थियों की ओर से यह शिकायत प्रतिभाग किया।

हालात के चलते पहले काउंसिलिंग



i-NEXT PAGE 1

LUCKNOW (28 Nov, inext): एलयू दो दिसंबर से कैंपस में ऑड इवेन मोड में क्लास चलाने की तैयारी कर रहा है. साथ ही सभी संबद्ध कॉंलेजों में भी यही फॉर्मूला लागू करने का निर्णय लिया गया है. एलयू प्रशासन का कहना है कि यूजी-पीजी क्लास में स्टूडेंट्स की संख्या अधिक होने की वजह से उन्हें ऑड-इवेन फॉर्मूले की तर्ज पर बुलाया जाएगा. स्टूडेंट्स लेजर नंबर के आखरी नंबर के आधार पर कॉलेज और यूनिवर्सिटी कैंपस में आएंगे. पेश है श्याम चंद्र सिंह की रिपोर्ट.

अभ्यर्थी शनिवार रात तक ज्यादा भविष्य के अवसर और चुनौतियां' आनलाइन कार्यशाला में मौजूद ववता 🌒 जागरण

आ रही है कि रैंक अच्छी होने के लिविव के प्रवक्ता दुर्गेश वादों का निपटारा होना बाकी है।

सके। उन्होंने बताया कि अधिकतर अंतरराष्ट्रीय छात्र-छात्राओं ने चाहिए, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय मिलता है।

चली थी। कोरोना संक्रमण से उपजे जिसमें समय के अनसार अमलचल अच्छा उदाहरण पंचायत है और मौजद रहे।

**JAGRAN CITY PAGE IV** 

बीएड प्रवेश परीक्षाः सीट आवंटन आज से

30 हजार से अधिक अभ्यर्थियों के पंजीकरण के बाद च्वाइस फिलिंग का अंतिम मौका समाप्त

उत्तर प्रदेश संयुक्त बीएड प्रवेश **मध्यस्थता के प्रभाव को समझना जरूरी**: न्यायमूर्ति कौशल जयेंद्र

से ज्यादा सीट लाक करें, ताकि विषय पर आयोजित कार्यशाला परिवर्तन करने की आवश्यकता है। केवल हिन्द लॉ में ही नहीं, बल्कि

उन्हें मनपसंद कालेज आवंटित हो में दो सौ से अधिक राष्ट्रीय एवं हमें मध्यस्थता के प्रभाव को समझना मुस्लिम लॉ में भी हिदाया का उल्लेख

को सलाह दी जा रही है कि वे अपनी के बारे में चैतन्यता को विकसित हुए कहाकि किस प्रकार वैकल्पिक से संबद्ध हरजोत सिंह, इंडियन

संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड 2020 उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति कौशल निपटारा किया जा सकता है। उन्होंने विक्टोरिया यूनिवर्सिटी से पीएचडी

से शुरू हुई थी और आठ नवंबर तक का पुराना माडल आज भी प्रचलित है. ही ऐसी व्यवस्था थी, जिसका सबसे के असिस्टेंट प्रो. पंचत्रशि देव शर्मा

प्रक्रिया 21 सितंबर से शुरू होनी थी, को ध्यान में रखते हुए बीएड संयुक्त अध्यर्थियों को ईडब्ल्यूएस के तहत होगी। साथ ही जिन अध्यर्थियों को

मगर तमाम अध्यर्थियों की अंतिम वर्ष प्रवेश परीक्षा 2020 की काउंसिलिंग 641 सीटों पर भी प्रवेश दिया जा रहा निजी शिक्षण संस्थानों में निश्शल्क की परीक्षाएं जारी होने के कारण अभी की तारीख को आगे बढ़ा दिया गया है। यह व्यवस्था केवल सरकारी और प्रवेश की सुविधा दी जाती थी, वह

परिणाम आने शेष थे। इन अध्यर्थियों था। उन्होंने बताया कि इस बार अनुदानित महाविद्यालयों में ही लागू इस वर्ष लागू नहीं होगी।

## कॉलेज में अलग ं ऑनलाइन पढा अलग नियम | उसे रिवाइज करें

कॉलेजों का सेशन पटरी पर : है तो उसे दूर करने के लिए

संचालित करने को कहा है. ं करनी चाहिए.

लाने को एक साथ क्लासेस : कॉलेजों को अलग से व्यवस्था

जारी रखने की बात कर रहा : जो चीजें ठीक से समझ नही को आने की सूचना नहीं मिली 🔅 ऑफलाइन मोड में भी अगर

कॉलेजों ने क्लास शुरू करने एलयू ने कॉलेजों को जो के लिए अपने स्तर से मानक एडवाइजरी भेजी है, उसमें कहा तय किए हैं. कोई हफ्ते में एक गया है कि ऑनलाइन जो पदाया दिन स्टूडेंट्स को बुलाने की 🔋 गया है, उसे थोड़ा-थोड़ा रिवाइज तैयारी कर रहा है तो कोई : कराया जाए. इससे स्टूडेंट्स ऑफलाइन-ऑनलाइन पढ़ाई 🗄 को ऑनलाइन क्लास के समय है. कई कॉलेजों में तो स्ट्डेंटस 🗄 आई है, वह समझ आ जाएंगी. है. युनिवर्सिटी ने अपने साथ 🗄 स्टूडेंट्स को कोई प्राब्लम आती

लखनऊ यूनिवर्सिटी प्रशासन मार्च लास्ट या अप्रैल फर्स्ट वीक में नए सेशन का फर्स्ट सेमेस्टर पूरा कराने की तैयारी में है, जिससे जून तक सेशन पटरी पर लाया जा सके. ऐसे में ऑफलाइन मोड में क्लास चलेंगी तो स्टूडेंट्स को दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है. इसे ध्यान में रखते हुए एलयू ने सभी कॉलेजों को इस गाइडलाइन का पालन करने को कहा है ताकि कोरोना महामारी की वजह से पटरी से एजुकेशन सिस्टम को

अप्रैल फर्स्ट वीक में पूरा हो पहला सेमेस्टर

**थ्ये** ऑड इवेन मोड में क्लास चलाने की तैयारी कर ली गई है. सभी एचओडी को इस बारे में निर्देश दिया जा चुका है. डिग्री कॉलेजों को भी इसी बेस पर क्लास चलानी होंगी. डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता, एलयू

**THE PIONEER PAGE 4** 

'Saraswati supercluster'

ट्रैक पर लाया जा सके.

# This LU alumnus discovered

Shishir Sankhyayan, who along with his team, is credited with the discovery of Saraswati supercluster of galaxies at a young age of 30 years, University's Astronomy departto Lucknow University and he s currently a post-doctoral for Radio Astrophysics in Pune

every field such as science, arts Talking about the Saraswati supercluster," he said.



Currently a post-doctoral fellow at **National Centre for Radio Astrophysics** in Pune, Shishir Sankhyayan will be "When I was in school, I was moving to University of Tartu, Estonia for next post-doctoral fellowship

Sankhyayan said the post- know much about them, these cluster when he was doing doctoral fellowship at Estonia superclusters or river of galax- PhD in England, but since we

in Europe was a prestigious ies are large-scale clusters and were all Indians with Indian one. "It was a grant proposal through them we can study the affiliations, we are credited as and they took proposals from theory of evolution," he said. the first Indians to discover a

### ry on Lucknow University which was released during the centennial foundation day celebration has become the most-viewed video on

Within 48 hours, the 13minute documentary titled 'Ye Hai Lucknow Vishwavidyalaya' has garnered over 18,000 views.

the institution's YouTube

channel.

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: The documenta-

LU's official YouTube channel has 12,000 subscribers while the views are 6,000 more than the subscribers. Before this, videos on LU admissions got the highest of around 7,000 views.

Shot with drone and high-resolution cameras, the documentary covers old and second campus of the university, its history, illustrious alumni, contribution of talugdars and minute de-

lism and mass communica-

## 'We can learn cooperation from insects'

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: What can the in sect society teach us humans? A lot, elucidated Prof. Raghvendra Gadagkar, DST year of science chair, centre for ecological sciences, at the Indian Insti tute of Science during the special lecture organized by zoology department on Saturday, "We should learn from insect societies of ants, bees, wasp and termi tes how to live together, cooperate and build a democratic setup. Such cooperation can save one from external conflicts," he said.

The lecture titled, "Car we understand an insect soclety: and why should we ca-

Prof. Gadagkar talked in general about insect societies and their hallmarks of cooperation, division of labour and sacrifice for their 20 days. The song, historical kin by taking the examples journey and the script were of bees, wasps and ants. He especially talked about a tiny wasp that has a very dethe video was also shared on ting and electing the queen of their hive with a long list of heir designates that do

Alok Kumar Rai said, "High not big money, but rather number of views and likes simple effective experi-ments are the backbone of show people's love for the good science. "Cooperation university. The video has not within insect societies majust touched the hearts of kes them better at warding dents of Lucknow and other cooperation and external can be emulated by human societies," said Prof Ragha-

s an alumnus of Lucknow ment. Sankhyayan's interest in the celestial space brought him fellow at the National Centre

pleted BSc from LU in 2008. बाद भी उन्हें अपनी पसंद के कालेज श्रीवास्तव ने बताया कि कार्यशाला 🛮 डॉ. रोमेश गौतम ने वैकल्पिक मारगुब कबीर, ट्विनवुड लॉ प्रैक्टिस always interested in the stars and planets and nobody knew नहीं मिल रहे हैं। ऐसे में अध्यर्थियों का उद्देश्य मध्यस्थता न्यायाधिकरण विवाद समाधान के विषय में बताते लिमिटेड, बर्मिंघम, यूनाइटेड किंगडम what should I do to make a पसंद के कालेजों की ज्यादा से ज्यादा करना है। विधि संकाय के प्रमुख विवाद समाधान को विकसित किया इंस्टीट्यूट ऑफ आबिंट्रेशन एंड व्वाइस भरें। आवंटन में पूरी तरह से एवं विभागाध्यक्ष प्रो. सीपी सिंह गया और इसकी भारत में वर्तमान की मिडिएशन नई दिल्ली की डायरेक्टर 19 अक्टबर से शरू हुई थी छात्रों का चतुर्मखी विकास किया जा - उन्होंने बताया कि इसके माध्यम न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ के सकता है। वक्ताओं में इलाहाबाद से बिना मुकदमेबाजी के वादों का वरिष्ठ अधिवक्ता मनीष मेहरोत्रा एवं की कार्उसिलिंग प्रक्रिया 19 अक्टूबर जयेंद्र ने कहाकि भारत में मध्यस्थता बताया कि भारत में प्राचीन काल से कर रहे तथा लखनऊ विश्वविद्यालय

### career in astronomy. And then and computer science. Only 12 supercluster, he said two per-I found that it was being taught students were selected and I sons who were credited for the at LU. Besides, the presence of was one of them," he said. He discovery was Joydeep Bagchi Indira Gandhi Planetarium in added that he chose Estonia and himself. "Though we were the city helped a lot in under- because the University of Tartu the second group of six Indian standing the practical part of is a pioneer in the field of large- to find the supercluster, howastronomy. From LU, I got the scale structures in which he has ever, the first Indian to discovguidance to move ahead and done PhD. He said he would be er a supercluster was Somak eachers such as Dr Alka working on finding more Ray Chaudhary, who is cur-Mishra and others helped me superclusters in the universe. rently the director of IUCCA. "This is because we do not He discovered Shapley super-

The documentary was made by the head of Lucknow University's journa-

## **HINDUSTAN TIMES PAGE 2**

# xpressions

# From a fighter pilot and LU HoD to selfless seeker of spiritual truth

सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता



Dr Ranu Uniyal

esire begets desire. I marvel at what led this young man of 28 to move to the Himalayas, renounce the comfort of the colony and reside in a remote ashram in Almora in the 1930s. This was the time when India was still reeling under British oppression. Ronald Henry Nixon, head of the Department of English and Modern European languages, renounced the world and chose the Indian hills as his home. I salute the spirit that guided him. He chose to give up his life of privilege and became a san-

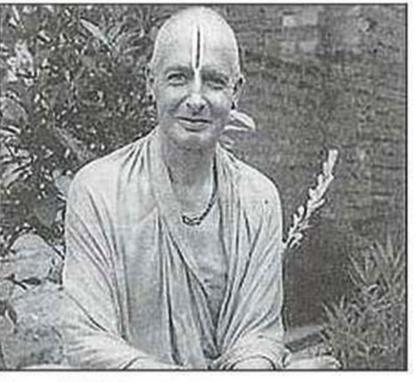
The more I see the unrelenting quest for fame, wealth, position and power within myself and in the people around me, the more I get intrigued by the name of this selfless seeker who established the Mirtola Ashram and dedicated himself to a study of the Upanishads and Indian scriptures. I find myself getting drawn to this frail figure with a steely determination which none could equal. I often love to sit on the other side of my head's chair and glance at all the names who have graced the chair, the illustrious figures and I stop at the name of R.H. Nixon.

As we celebrate the centenary year of the University of Lucknow, I am reminded of the first Vice Chancellor Prof Gyanedra Nath Chakravarti, who invited Ronald Henry Nixon, a young Cambridge graduate, to head the Department of English at the University of Lucknow. Ronald Nixon had served as a British fighter pilot in the First World War. A miraculous escape in mid-air compelled him to think of the transitory nature of life. He joined Kings College, Cambridge, to pursue English literature. During his stay at Cambridge, he developed an interest in Theosophy, Buddhist studies and Pali. In the mid 1920s, he came to India and took over as the Head of the Department of English, University of Lucknow.

Vice Chancellor, Gyanendra Chakravarti was a close associate of Annie Besant and Madame Blavatsky and had represented India at the Chicago Theosophy meet in USA. R.H. Nixon found a kindred soul in him who could enlighten him on matters close to the spirit. It is interesting to note that Chakravarti's second wife Monika too was inclined towards matters close to the life of the spirit. Mother of four children, Monika

expressed her desire to become a vairagin and was initiated as a nun by none other than her husband Gyanedra Nath Chakravarti into the Vaisnava fold in

After renouncing the world, Monika became Yashoda Mai and Ronald Nixon followed her to Almora in 1930. A formal guru-shishya bond was established between the two. She lovingly addressed him as Gopal. Ronald Nixon too took the vows of celibacy and chose the life of a monk. As Swami Krishna Prem, he settled in Almora and built a Radha Krishna Temple. Mirtola, an ashram near Almora, became their spiritual abode and together they practised Vaishnavism. As per the rules of monkhood, Ronald went on foot, begging for food for himself and his Guru. After the death of his Guru, Yashoda Ma in 1944, Swami Krishna Prem became the head of the Mirtola Ashram. He is considered to be the first foreigner to be initiated into the orthodox Gaudiya Vaishnava Sampradaya. This religious movement was spearheaded by Chaitanya Mahaprabhu and has over the years led to the Hare Krishna Movement-International Society for Krishna Consciousness. In



Swami Krishna Prem.

1948, he came in contact with Sri Aurobindo, The Mother (Mira Alfassa) and Sri Ramana Maharishi. In his correspondence with Dilip Kumar Roy, a singer and a disciple of Sri Aurobindo, one gets a glimpse of the innate curiosity about God that led to a life-long friendship between him and Swami Krishna Prem

During his stay in Almora, Swami Krishna Prem taught himself Hindi, Bengali and Sanskrit. He wrote extensively about the secret within the Upanishads. He was an assiduous scholar and interpreted the ancient scriptures in

English. He wrote "The Yoga of the Bhagavat Gita" in 1938. Is it not surprising that while the British colonial powers continued to suppress and control India, Krishna Prem immersed himself in the study of Indian religious texts? He lived a life of contemplation by dedicating himself to his Guru. In his quest for selfrealization, he chose the distant Almora as his home and a life of austerity. He gave up his family, home and his country to quench the fire within. As a seeker of truth, he surrendered himself at the feet of his Guru and wrote, "The Guru is the Light and Grace of Krishna (nothing else can be a Guru)".

Years of selfless service, extreme devotion and passion for the Lord led him to the eternal truth that Bhakti alone can lead man to freedom and enable him to attain Moksha. He practised vairagya and chose the life of a stithpragya. In his life, we see a perfect blend of bhakti and gyana. From Theosophy to Buddhism to Orthodox Hindu traditions, his journey exemplifies an unknown quest, relentless hunger to reach the inner recesses of the soul and, as he lay on his bed waiting to relinquish the body, his final words were "My ship

is sailing".

On November 14, 2020, it was the revered Swami Krishna Prem's 55th death anniversary. It is ironical to lay claims on one who gave up everything his life, career and all the trapping of this earth - renounced his name, family and also his country, we are happy and proud that the Department of English was blessed by his presence and it was in Lucknow that he found his spiritual guide and mentor who opened the path of self-realization for him through Bhakti and selfless service to God.

"God-forsaken and man- forsaken I may be, but Guru-forsaken never". His words continue to inspire me and, in moments of deep personal crisis, his frail figure flashes in my mind's eye and my hands fold in prayer with deep humility. Here lies abundance and surrender - emptiness becomes fullness and once full there are no battles to fight, no space to conquer. Neither grief nor longing am I. I am only love.

The writer is professor and Head, Department of English and Modern European Languages, University of Lucknow.